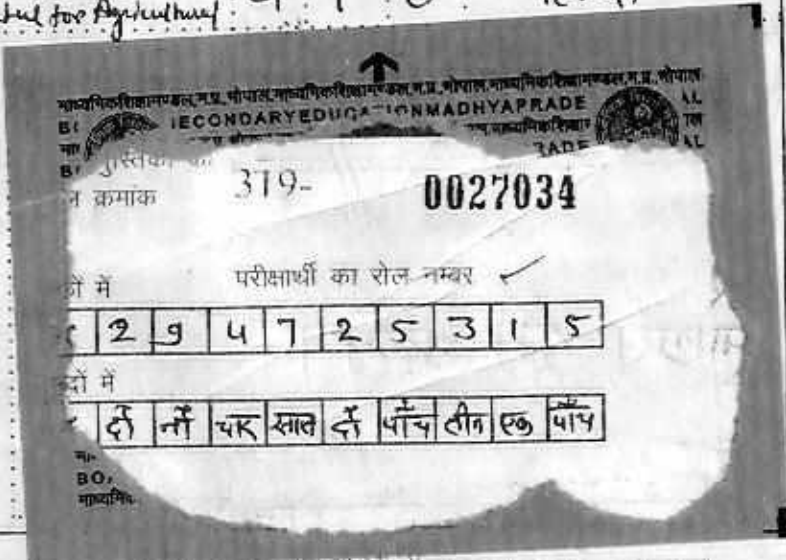




परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय: **Sci. of science & math. essential for Agriculture**
 विषय कीड: **4 1 0**
 परीक्षा का माध्यम: **हिन्दी**

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓



उदाहरणार्थ:

1	1	2	4	3	9	5	6	8
---	---	---	---	---	---	---	---	---

 एक एक दो चार तीन नौ पांच छ आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष द्वारा भरा जावे ↓

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में शब्दों में
 ख :- परीक्षार्थी का कक्षा क्रमांक
 ग :- परीक्षा का दिनांक
 परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: **सेकेंडरी परीक्षा 2019**
 केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर: **केन्द्राध्यक्ष केन्द्र क्र. 471005**
 पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: **A. Talwar**
 केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर: **Raj**

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई हो। क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के फूलों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।
 निर्धारित मुद्रा: **नाम मण्डल नाम मोबाईल नम्बर परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम**
 उप मुख्य परीक्षक: **R.K.T. REG.N.**

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्रविष्टि करें (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

2

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 2 क अंक कुल अंक



क्र.

~~सही - विकल्प~~

~~180,500~~

(i) मैत्र लैस की फोकस दूरी बढ़ना।

(ii) अपमार्जक।

(iii) मेग्नेट।

(iv) जिसके दृष्टा पाँव हों।

(v) मानक विचलन

समान्तर माध्य

रिक्त स्थान पूर्ति

(i) आश्रयोडा।

(ii) वाट (Watt)। X

(iii) ताँबा।

(iv) a^3 (श्रुजा) 3 ।

(v) $\frac{1}{\sqrt{2}}$ ।

3

$$\boxed{\text{योग पूरा पृष्ठ}} + \boxed{\text{पृष्ठ के}} = \boxed{\text{सही - जोड़ी}}$$



सही - जोड़ी

"A"

"B"

सहजीवित।

एजेटीबेक्टर।

(ii) नीलहरित शैवाल

राइजोबियम।

(iii) किण्वन

जाइमेल।

(iv) परिशोधित स्फिडट

95.6% परिशुद्ध एल्कोहल।

(v) पावर एल्कोहल

80% परिशुद्ध एल्कोहल।

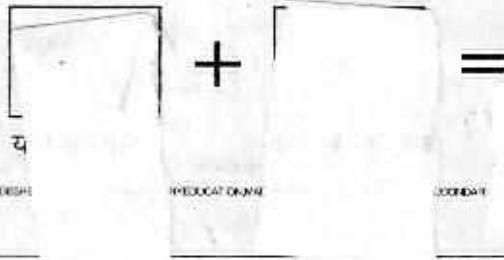
सत्य / असत्य

(i) सत्य

(ii) सत्य

P.T.O.

4



SECONDARY EDUCATION BOARD PAPER FOR THE BOARD OF SECONDARY EDUCATION PAPER FOR THE BOARD OF SECONDARY EDUCATION PAPER FOR THE BOARD OF SECONDARY EDUCATION PAPER FOR THE BOARD OF SECONDARY EDUCATION PAPER FOR THE BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

Paper Labels: J-45T-16 99.1 X 33.9 mm X.16

- (i) असत्य ✓
- (ii) सत्य ✓
- (iii) असत्य ✓

P05

B05

S

E

मानव नेत्र व कैमरा में अन्तर

मानव नेत्र व कैमरा में प्रमुख दो अन्तर निम्न हैं:-

क्र.	मानव नेत्र	कैमरा
1.	मानव नेत्र में बना प्रतिबिम्ब उल्टा होता है।	कैमरा की फिल्म में बना प्रतिबिम्ब सीधा होता है।
2.	मानव नेत्र में बना प्रतिबिम्ब पूर्णतः दोषमुक्त होता है।	कैमरे में बना प्रतिबिम्ब दोषमुक्त नहीं होता है।
3.	मानव नेत्र में जलीय द्रव व काँचमय द्रव पाये जाते हैं।	कैमरे में कोई द्रव नहीं पाया जाता है।

5

$$\boxed{\text{योग}} + \boxed{\text{पृ}} = \boxed{\text{पृ}} = \boxed{\text{पृ}}$$



'OR'

कूलॉम का व्युत्क्रम वर्ग का नियम व सूत्र

कूलॉम का व्युत्क्रम वर्ग का नियम निम्न निम्न है :-

- (1) जब दोनो ध्रुवों के बीच की दूरी स्थिर हो तब उन दोनो के बीच लगने वाला बल उनके ध्रुव पद्यों के गुणनफल के अनुक्रमानुपाती होगा।
- (2) जब दोनो ध्रुव पद्यों स्थिर हो तब उनके बीच लगने वाला बल उनके बीच की दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होगा।
अतः दो ध्रुव पद्यों q_1 और q_2 हैं तथा उनके बीच की दूरी r है तो इस नियम के अनुसार

$$F \propto q_1 \times q_2 \quad \text{--- (1)}$$

$$F \propto \frac{1}{r^2} \quad \text{--- (2)}$$

दोनो समी ① and ② को मिलाने पर

$$F \propto \frac{q_1 q_2}{r^2}$$

* सूत्र $\leftarrow \boxed{F = k \frac{q_1 q_2}{r^2}}$

यहाँ 'K' एक अनुक्रमानुपाती स्थिरांक है।

6

L
य

+

पृष्ठ

=



प्रश्न क्र.

५०७
३०७.

किण्वन क्रिया के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

किण्वन क्रिया के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निम्न हैं-

(1) किण्वन क्रिया के लिए सबसे उत्तम तापमान 25-30°C होता है। अतः यह तापमान उपलब्ध होना चाहिए।

B

S

E

(2) किण्वन के लिए खाद्य पदार्थ (Food product) के रूप में अमोनियम सल्फेट व नाइट्रेट होना चाहिए।

(3) जिस विलयन में किण्वन क्रिया हो रही हो, उसकी सान्द्रता 8 से 10% होनी चाहिए।

(4) परिरक्षक पदार्थ जैसे फिनोल आदि व उचित वातन की व्यवस्था होनी चाहिए।

P.T.O.

7

यो.

+

पृष्ठ

=

de/mat.



प्रश्न क्र.

पृ०८

उ०८

“OR”

एल्केन , एल्किन तथा एल्काइन की परिभाषा

① एल्केन :-

वह कार्बनिक यौगिक जिसमें एकल बन्ध (Single bond) होता है, उसे एल्केन कहते हैं। एल्केन श्रेणी का सामान्य सूत्र - C_nH_{2n+2} होता है।

उदा० - CH_4 (मेथेन) , C_2H_6 (एथेन) आदि।

② एल्किन :-

वह कार्बनिक यौगिक जिसमें द्वि बन्ध (Double bond) होता है, उसे एल्किन कहते हैं। एल्किन श्रेणी का सामान्य सूत्र - C_nH_{2n} होता है।

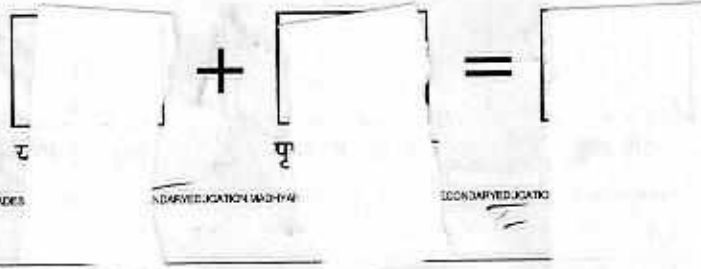
उदा० - C_2H_4 (एथीन) , C_3H_6 (प्रोपीन) आदि।

③ एल्काइन :-

वह कार्बनिक यौगिक जिसमें त्रि बन्ध से बंधे होते हैं, एल्काइन कहलाते हैं। एल्काइन का सामान्य सूत्र - C_nH_{2n-2} होता है।

P.T.O.

8



प्रश्न क्र.

उदा० C_2H_2 (इथाइन) गैस।

प०१
उ०१

मालवेसी कुल के तीन गैसों के सामान्य व वानस्पतिक नाम

B
S
E

मालवेसी कुल के प्रमुख गैसों के सामान्य व वानस्पतिक नाम निम्न हैं:-

क्र.	मालवेसी कुल (गैस)	वानस्पतिक नाम
1.	<u>भिण्डा</u>	<u>ट्रिबिस्कस एस्कूलेक्टस</u>
2.	<u>गुड़दल</u>	<u>ट्रिबिस्कस रोजा-सामनेन्सिस</u>
3.	<u>कपास</u>	<u>गॉसिपियम स्पी०</u>
4.	<u>पटसन</u>	<u>ट्रिबिस्कस कर्नाबिन्स</u>

P.T.O.

9



योग 1

+



पृष्ठ 9 के अंक

=



कु



ग्रैमिनी कुल का आर्थिक महत्व

ग्रैमिनी कुल का आर्थिक महत्व निम्न है :-

(1) खाने योग्य पौधे :-

(क) ट्रिटिकम एस्ट्रीवम (गेहु) :- गेहु के पौधे के बीजों का आटा से रोटियाँ बनाई जाती हैं, साथ ही बिस्कूट, ब्रेड आदि बनाए जाते हैं।

(ख) ओरिजा सटारवा (चावल) :- संसार में सबसे ज्यादा खाया जाने वाला धान्य चावल है।

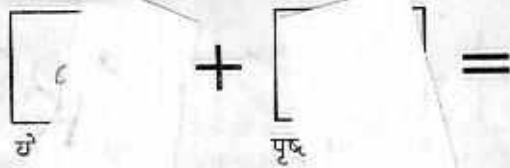
(ग) जिया मेज (मक्का) :- मक्का के दानों का आटा से भी रोटियाँ बनाई जाती हैं साथ ही पॉपकॉर्न आदि बनाए जाते हैं।

(2) उद्योगों में प्रयुक्त पौधे :-

(1) सैकेरम ऑफीसिनेस्म (गन्ना) :- गन्ने के लंने से प्राप्त रस से शक्कर (Sugar) बनाई जाती है।

(2) सैकेरम मूजा (मूँज), बम्बुरा स्पी. (बाँस) :- बाँस का उपयोग कागज उद्योग में कागज बनाने के लिए किया जाता है।
P.T.O.

10



प्रश्न क्र.

साथ ही मुँज से रस्सी, बॉट्ट आदि बनाए जाते हैं।

(3) अन्य महत्व :-

(क) हॉर्डियम वलगेयर (जॉ) :-

जॉ का उपयोग शराब उद्योग में शराब बनाने के लिए किया जाता है।

B
S
E

(ख) सिम्बोपोगान स्पी. (लेमन घास) व

ब्रिटीवेरिया जिन्जिनर्डिस (खस घास) :-

दोनों दोनों से प्राप्त तेल से सौन्दर्य प्रसाधनों, साबुन आदि बनाए जाते हैं।

प्र०॥

उ०॥

विद्युत वाहक बल तथा विभवान्तर
में अन्तर

P.T.O.

11

$$\left[\begin{array}{c} 2 \\ 5 \end{array} \right] + \left[\begin{array}{c} 4 \\ 6 \end{array} \right] = \left[\begin{array}{c} 6 \\ 11 \end{array} \right]$$



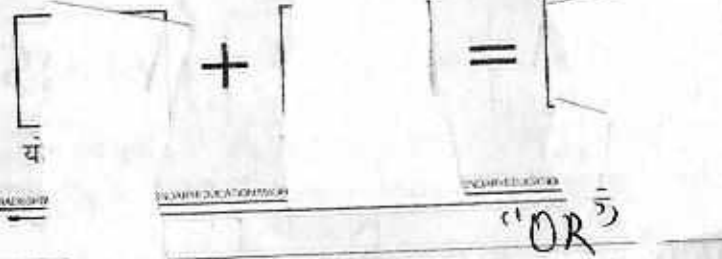
प्रश्न क्र.

विद्युत वाहक बल तथा विभावांतर में प्रमुख अन्तर निम्न है।

क्र.	विद्युत वाहक बल	विभावांतर
1.	एकंक आवेश को पुरे परिपथ (सेल सहित परिपथ) में प्रवाहित करने के लिए सेल द्वारा ध्यय (खर्च) ऊर्जा को सेल का विद्युत वाहक बल कहते हैं।	किसी परिपथ में किन्ही दो बिन्दुओं के बीच एकंक आवेश को प्रवाहित करने में ध्यय ऊर्जा को उन बिन्दुओं के बीच का विभावांतर कहते हैं।
2.	वि.वा.बल प्लेटों की संख्या, विद्युत अपघट्य की मात्रा पर निर्भर करता है।	विभावांतर परिपथ के बाध्य प्रतिरोध पर निर्भर करता है।
3.	जब सेल से धारा ली जा रही हो तब विभावांतर, वि.व.बल से कम होता है।	जब सेल में धारा भरी जा रही हो तब वि.व.बल विभावांतर से ज्यादा होता है।
4.	विद्युत वाहक बल पर प्रतिरोध की मात्रा ज्यादा होती है।	वि.वा.बल की तुलना में प्रतिरोध की मात्रा कम होती है।

P.T.O.

12



प्रश्न क्र.

५०१२
३०१२

पेंट की परिभाषा व तीन विशेषताएँ

पेंट (Paint)

पेंट :- दीवार, लकड़ी, धातु आदि को रंगीन बनाने के लिए जिस तरल पदार्थ (liquid substance) का प्रयोग किया जाता है उसे पेंट (Paint) कहते हैं।

* पेंट के मुख्य गुण (विशेषताएँ) *

B
S
E

- (1) पेंट को जिस दिवार पर भी करा जाए, वह उसे पूर्ण रूप से सुरक्षित (सुरक्षा) प्रदान करना चाहिए।
- (2) पेंट जिस भी धातु पर किया जाए उस पर जंग (Rust) नहीं लगाने देना चाहिए।
- (3) पेंट जिस पर भी किया जाए उसे सुन्दर व आकर्षक दिखने योग्य बना देना चाहिए।
- (4) दिवार को क्षरण व नमी से बचाना चाहिए।
- (5) पेंट सरलता पूर्णक फैल जाना चाहिए जिस भी दीवार पर किया जाए।
- (6) पेंट की पर्त हल्के व उकसार लेनी चाहिए।

13

योग

+

पृष्ठ

=



प्रश्न क्र.

पृष्ठ

उप

जैव रसायन की परिभाषा व तीन महत्व

जैव रसायन :-

रसायन विज्ञान की वह शाखा जिसमें जैविक अभिक्रियाओं तथा उनमें होने वाले रसायनिक परिवर्तनों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है वह शाखा जैव रसायन (Biochemistry) कहलाती है।

B
S
E

★ जैव-रसायन के तीन महत्व ★

- (1) मनुष्य द्वारा प्रयोग में लेने जाने वाले भोजन के विभिन्न अवयवों के आवश्यकताओं द्वारा प्राप्त ऊर्जा का अध्ययन जैव-रसायन द्वारा किया जा सकता है।
- (2) जैव-रसायन से विभिन्न वंशानुक्रम का अध्ययन सम्भव हो पाया है।

फसलों में भी इसकी वजह से उत्पादन में वृद्धि हुई है।

- (4) विभिन्न रोगों की खोज तथा उन्हें जड़ से खत्म जैव रसायन द्वारा किया जा रहा है।

P.T.O.

14

[] + [] = []

यो

पृष्ठ 14 के अंक



OR

प्रश्न क्र.

पु 014

उ 014

आनुवंशिकी की परिभाषा व तीन नियम

आनुवंशिकी :-

जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें आनुवंशिकता तथा विचलना (Variation) की कृमिका का अध्ययन किया जाता है, वह शाखा आनुवंशिकी कहलाती है।

B
S
E

★ आनुवंशिकी के जनक → 'ग्रेगर जॉन मेण्डल' हैं।

मेण्डल द्वारा दिए गए आनुवंशिकी के तीन नियम इस प्रकार हैं :-

1) प्रभावी गुण का नियम (Law of Dominance) :-

इस नियम के अनुसार जब परस्पर एक जोड़ी लक्षणों के ध्यान में रखकर जब उनके बीच संकरण कराया जाता है तो प्रथम पीढ़ी में सिर्फ प्रभावी लक्षण ही दिखते हैं तथा जो लक्षण प्रथम पीढ़ी में छिपा रहते हैं वे अप्रभावी लक्षण होते हैं।

जैसे :-

RR	X	rr
(शुद्ध लाल पुष्प वाले पौधे)		(शुद्ध सफेद पुष्प वाले पौधे)
↓ संकरण		
F ₁ पीढ़ी	Rr	(संकर लाल पुष्प वाले पौधे)



पृष्ठ 20-21 तक



प्रश्न क्र.

2) पृथक्करण का नियम (Law of Segregation)

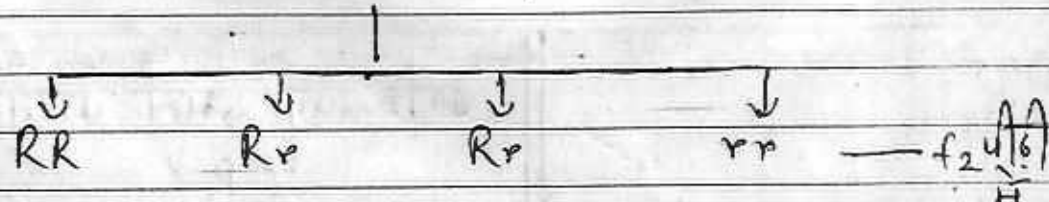
इस नियम के अनुसार जब परस्पर एक जोड़ी शुद्ध लक्षणों वाले पाँधों के बीच संकरण कराया तो प्रथम पीढ़ी में प्रभावी लक्षण वाले पाँधे प्राप्त हुए। जब प्रथम पीढ़ी से प्राप्त सन्तानों में स्वपरागण कराया तो द्वितीय पीढ़ी में लक्षणों का पृथक्करण एक निश्चित अनुपात में हो गया। अर्थात् प्रथम पीढ़ी में साथ रहने वाले लक्षण आपस में मिश्रण नहीं हुआ और युग्मकों के निर्माण के साथ एक निश्चित अनुपात में पृथक्करण हो गया। अतः इस लिए इसे पृथक्करण का नियम कहते हैं।

B
S
E

जैसे \rightarrow RR (शुद्ध पाँधे) \times rr (शुद्ध पाँधे)
(प्रभावी गुण) (अप्रभावी गुण)

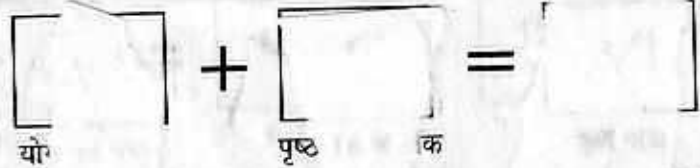
↓ संकरण
Rr \rightarrow F₁ पीढ़ी में
(संकर लाल)

↓ स्वपरागण



अर्थात् तीन पाँधे लाल व एक पाँधा सफेद प्राप्त हुआ जिसका अनुपात है 3:1।

P.T.O.



प्रश्न क.

8 स्वतन्त्र अपभ्रुन का नियम है

इस नियम के अनुसार जब दो जोड़ी परस्पर विपरित लक्षणों के लेकर संकरण कराया तो प्रथम पीढ़ी में सिर्फ प्रभावी लक्षण ही दृष्टिगोचर हुए लेकिन युग्मजों के निर्माण के साथ F_2 पीढ़ी में लक्षणों का एक निश्चित अनुपात आए और वह है 9:3:3:1। अर्थात् एक लक्षण की वंशागति दूसरे को प्रभावित नहीं करती।

जैसे :- जब मेडल में गोल और पीला वाले पौधों को जब लरे और झुरीदार से कराया तो प्रथम पीढ़ी में सिर्फ गोल और पीले ही प्राप्त हुए। लेकिन में उनमें स्वपूरामण कराया तो चार प्रकार के पौधे प्राप्त हुए जो निम्न हैं

- 1) गोल और पीला
- 2) गोल और लरे
- 3) पीले और झुरीदार
- 4) लरे - झुरीदार

उनका अनुपात या \rightarrow 9:3:3:1

O:15
A:15

माध्यिका ज्ञात करना 'OR'

P.T.O.

17

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

यों पृष्ठ 17 के अंक



प्रश्न क्र.

उल्लेख- C.N.	वर्ग	बारम्बारता	संचयी बारम्बारता
1	0-10	4	4
2	10-20	6	10
3	20-30	10	20
4	30-40	7	27
5	40-50	3	30
6	50-60	2	32
		$N = 32$	

$$\Rightarrow \frac{N}{2} = \frac{32}{2} = 16$$

संचयी बारम्बारता - 16, 20 बारम्बारता के अन्तर्गत आती है। अर्थात् अंशिक मध्यमक वर्ग (20-30) है

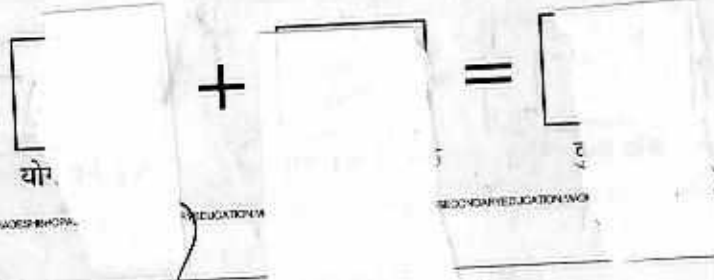
जहाँ - $l_1 = 20$, $l_2 = 30$, $f = 10$, $F = 7$

सूत्र \rightarrow मध्यमक = $l_1 + \frac{l_2 - l_1}{f} \left(\frac{N}{2} - F \right)$

$$\rightarrow 20 + \frac{30 - 20}{10} \left(\frac{32}{2} - 7 \right)$$

P.T.O.

18



प्रश्न क्र.

$$= 20 + \frac{30-20}{10} \left(\frac{32}{2} - 7 \right)$$

$$= 20 + \frac{10}{10} (16 - 7)$$

$$= 20 + 1 (9)$$

$$= 20 + 9$$

$$= 29 \text{ उत्तर}$$

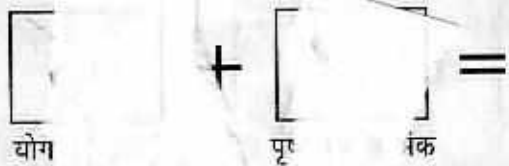
उत्तर :- भधिका - 29

B
S
E

Q. 16
A. 16

जलवायु और मौसम में अन्तर

P.T.O.



सं क्र.

जलवायु और मौसम में प्रमुख अंतर निम्न है:-

क्र.	जलवायु (Climate)	मौसम (Weather)
1.	किसी स्थान के वायुमण्डल में मौसम के परिवर्तन (Change) की दीर्घकालिक अवस्था जलवायु कहलाती है।	किसी स्थान की किसी विशेष समय में वायुमण्डल की अवस्था मौसम कहलाती है।
2.	जलवायु मौसम में होने वाली दीर्घकालिक घटनाओं पर निर्भर करता है। (लगभग 35 वर्ष)	वायुमण्डल में उठने वाली दैनिक घटनाओं पर मौसम निर्भर करता है।
3.	जलवायु दीर्घकालिक होता है।	मौसम अल्पकालिक होता है।
4.	जलवायु के अध्ययन करने वाले को जलवायु विज्ञान कहते हैं।	मौसम के अध्ययन करने को मौसम विज्ञान कहते हैं।
5.	कृषि जलवायु के आधार पर ली जाती है। जैसे:- ① अधिक वर्षा वाले स्थान पर धान। ② कम वर्षा वाले स्थान पर बाजरा।	फसलों में होने वाली घटना मौसम के आधार पर होती है। जैसे:- रबी के मौसम में अचनाक तेज वर्षा होने से फसल को नुकसान होता है।

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

पृष्ठ 20 के अंक



प्रश्न क्र.

५०१७
३०१७

वाष्पोत्सर्जन व बिन्दुस्त्रावण परिभाषा व वाष्पोत्सर्जन के प्रकार

★ वाष्पोत्सर्जन (Transpiration)
 जीवित पौधे के वायवीय भाग जैसे स्तम्भ, फूल, पत्ती, तना आदि से जल का वाष्प के रूप में बाहर निकलना, वाष्पोत्सर्जन कहलाता है।

B
S
E

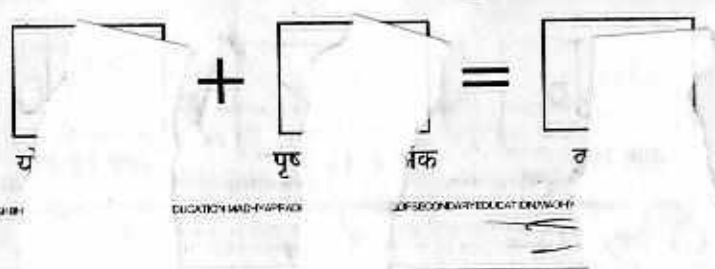
★ बिन्दुस्त्रावण (Guttation)
 पौधे की पत्तियों के किनारे से जल की बिन्दु के रूप में निकलना बिन्दुस्त्रावण कहलाता है।

बिन्दुस्त्रावण की क्रिया जलरन्ध्रे (Hydathode) द्वारा होती है। नम व मर्द गम पेशिका अर्थात् अर्द्ध पेशा में उगे पौधे में यह क्रिया प्रायः रात्रि या प्रातः काल के समय होती है।

★ वाष्पोत्सर्जन के प्रकार ★

वाष्पोत्सर्जन की क्रिया मुख्य रूप से स्थलीय वाष्पोत्सर्जन (Stomatal transpiration) द्वारा होती है। अन्य

P.T.O.



प्रश्न क्र.

वाष्पोत्सर्जन के प्रकार :-

(1) रन्ध्रीय वाष्पोत्सर्जन (Stomatal transpiration)

यह वाष्पोत्सर्जन पत्ती पर उपस्थित छिद्र जिन्हें रन्ध्र कहते हैं, उनके द्वारा होती है। पौधों में होने वाली कुल वाष्पोत्सर्जन की 80 से 90% वाष्पोत्सर्जन इसी प्रकार से होती है।

(2) उपत्वचीय वाष्पोत्सर्जन (Cuticular transpiration)

पौधे के बाह्यत्वचा पर पाई जाने वाली उपत्वचा (Cuticle) से यह वाष्पोत्सर्जन होता है। कुल वाष्पोत्सर्जन का 5 से 10% इस प्रकार से होता है।

(3) वातरन्ध्रीय वाष्पोत्सर्जन (Lenticular transpiration)

यह वाष्पोत्सर्जन कुछ काष्ठीय तने व फलों में पाये जाने वाले वातरन्ध्रों से होती है। यह सिर्फ पौधे में होने वाली वाष्पोत्सर्जन की 0.5 से 0.2% होती है।

P.T.O.

22

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

पृष्ठ 22 के अंक

कु



प्रश्न क्र.

५०१८

७०१८

प्राथमिक तथा द्वितीयक भाकड़ों में अन्तर

प्राथमिक भाकड़ों व द्वितीयक भाकड़ों में पाँच प्रमुख अन्तर निम्न हैं:-

क्र.	प्राथमिक भाकड़ें	द्वितीयक भाकड़ें
१.	प्राथमिक भाकड़ें स्वयं अन्वेषक (Investigator) द्वारा एकत्रित किए जाते हैं।	द्वितीयक भाकड़ें अन्वेषक द्वारा एकत्रित नहीं किए जाते हैं बल्कि किसी अन्य व्यक्ति या एजेन्सी द्वारा एकत्रित किए जाते हैं।
२.	ये भाकड़ें अधिक प्रासंगिक व सही होती हैं।	इन्हें प्रयोग करते समय सवधानी रखनी पड़ती है।
३.	इन भाकड़ों में सभी सुचनाएँ उपस्थित रहती हैं जो अन्वेषक को आवश्यक होती हैं।	इन भाकड़ों में कुछ-कुछ एक आवश्यक सुचनाएँ छूट जाती हैं।
४.	प्राथमिक भाकड़ों को एकत्रित करने में श्रम, समय और व्यय अधिक लगता है।	द्वितीयक भाकड़ों को प्राप्त करने के लिए अधिक खर्च नहीं करना पड़ता है।

P.T.O.

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

योग + पृष्ठ =



प्रश्न क्र.

क्र.	प्राथमिक आँकड़े	द्वितीयक आँकड़े
5.	<p>प्राथमिक आँकड़ों अन्वेषण के स्वयं के पूर्ण निर्धारित उद्देश्यों के लिए एकत्रित किए जाते हैं।</p>	<p>द्वितीयक आँकड़े किसी मुख्य व्यक्तित्व या एजेंसि द्वारा स्वयं के उद्देश्यों के लिए एकत्रित किए जाते हैं।</p>

B
S
E